**Poetry** 

(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)

Journal home page: https://integralresearch.in/

Vol. 02, No. 10, October. 2025

## मोहक पतझड़

## आशा सिंह 🖾

कवयित्री रायबरेली

हे प्रकृति ! मैं तुझ पे बलिहारी क्या ख़ूब चलाई पिचकारी , चित्रकार नहीं कोई तुझ जैसा जो दृश्य दिखाये मनोंहारी । प्रभ् नें रहमत बरसाई रंगों से करी है कारीगरी, फूलों के दर्प को चूर किया पत्तों की बनाई फ्लवारी । राहों के किनारे पेड़ों की मोहक ये छटा प्यारी -प्यारी, ऑखों से ग्ज़रते दृश्य लगें ज्यों द्ल्हन की च्नरी न्यारी । प्रभ् तेरी लीला अजब - गजब अद्भुत लागे ये छवि सारी , कहनें को मौसम पतझड़ का पर ऋत् की महिमा है भारी । मन मोहित है , आनंदित है एक अमिट छाप मन पे न्यारी, क्छ दिन में समय फिर बदलेगा बिछ्डेंगे सभी बारी बारी ।





(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Poetry (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)

Journal home page: <a href="https://integralresearch.in/">https://integralresearch.in/</a> Vol. 02, No. 10, October. 2025

है धन्य रचयिता हम सब का
अनुपम शृँगार पे मैं वारी ,
मन ! मंत्र -मुग्ध हो जाता है
कर जाता ऐसी जादूगरी ।
फिर नई कोपलें आयेंगी
होगी हरियाली सुखकारी
परिवर्तित करके रंग -रूप
यूँ ही चलती है सृष्टी सारी ।

